अहिंसक - नैतिक चेतना का प्रवर प्रतिनिधि

अणुव्रत

ई-संस्करण

वर्ष : 4, अंक : 3

जुलाई 2026

शिक्षा का उद्देश्य
प्रज्ञा-जागरण

वर्ष : 4 अंक : 3

जुलाई 2026

संपादक
संचय जैन

सह संपादक
मोहन मंगलम

संयोजक समाचार
पंकज दुधोड़िया

चित्रांकन
मनोज त्रिवेदी

पेज सेटिंग
मनीष सोनी

ई-संस्करण
विवेक अग्रवाल

आचार्य तुलसी पिछली सदी के महान संतों में से एक थे। उन्होंने लाखों लोगों का मार्गदर्शन किया। उन्हें बहुत ही कम आयु में तेरापंथ संघ प्रमुख की भारी जिम्मेदारी दे दी गयी थी, परंतु उनकी तपस्या और सिद्धांतों ने, जिन्हें वे जीवन पर्यंत जीते रहे, उन्हें अत्यंत प्रिय और परम पूजनीय बना दिया। वे प्रगतिशील और उदार थे। अपनी बात समझाने के लिए वे स्वयं को अनुकूल बनाने में हमेशा तत्पर रहते थे। उन्होंने अहिंसा और शांति के लिए अटल प्रतिबद्धता का प्रदर्शन किया। उनके कार्यों, प्रवचनों में हमेशा प्रेम, करुणा और सभी के लिए चिंता प्रस्फुटित होती थी।

श्री श्री रविशंकर
आध्यात्मिक गुरु

अध्यक्ष : **प्रतापसिंह दुगड़**
महामंत्री : **मनोज सिंघवी**
कोषाध्यक्ष : **राकेश बरड़िया**

अणुविभा
अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
अणुव्रत भवन, 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 2
दूरभाष : 011-23233345
मोबाइल : 9116634512

www.anuvibha.org
anuvrat.patrika@anuvibha.org

क्यों भटक गयी है शिक्षा की दिशा?

केवल अर्थोपार्जन के लिए सक्षम बनाना शिक्षा का उद्देश्य नहीं हो सकता। हालाँकि, आर्थिक सुनिश्चितता की भी गारंटी कहाँ रही है अब? शिक्षित व्यक्ति से यह अपेक्षा की जाती है कि वह एक गरिमापूर्ण जीवन जीते हुए जीवन के हर उतार-चढ़ाव का सामना नैतिक दृढ़ता के साथ कर सके। क्या आज की शिक्षा इस अपेक्षा को पूरा करती है?

वैज्ञानिक प्रगति ने आज जब हमारे जीवन की रफ्तार को कई गुणा बढ़ा दिया है, शिक्षा बच्चों को भावनात्मक दृष्टि से भी मजबूत बनाये, यह समय की माँग है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता (Emotional Intelligence) के प्रशिक्षण के बिना शिक्षा की कोई भी व्यवस्था अपूर्ण है, दोषयुक्त है, पंगु है। भावना-शून्य बौद्धिक विकास को बढ़ावा देकर हम सम्पूर्ण मानवता को खतरे में धकेल रहे हैं।

आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ ने दशकों पूर्व शिक्षा के इस अधूरेपन को पहचान लिया था और 'अणुव्रत' व 'जीवन विज्ञान' के रूप में एक वृहत्तर समाधान प्रस्तुत किया था। वर्तमान अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण के मार्गदर्शन में अणुविभा इन दोनों ही महत्वपूर्ण आयामों को व्यापक बनाने के अभियान में जुटी है। जब तक देश का व्यापक जनमानस मूल मुद्दे को नहीं पकड़ेगा, सरकारी स्तर पर होने वाले सतही समाधान शिक्षा की वर्तमान दयनीय स्थिति में कोई सुधार ला पाएंगे, इसमें संदेह पैदा होता है। शुरुआत हम स्वयं से करें, स्पष्ट दिशा के साथ आगे बढ़ें और व्यापक बदलाव के वाहक बनें - रास्ता लंबा हो सकता है लेकिन मंजिल अवश्य मिलेगी। शुभकामनाएं!

- संचय जैन
sanchay_avb@yahoo.com

शिक्षा का उद्देश्य प्रज्ञा-जागरण

■ आचार्य तुलसी

मानवीय चेतना दो प्रकार के मूल्यों की परिधि में पल्लवित होती है। जीवन के कुछ मूल्य शाश्वत होते हैं और कुछ परिवर्तनशील। शिक्षा जीवन का शाश्वत मूल्य है। कोई भी अज्ञानी व्यक्ति अपने जीवन को विकासशील नहीं बना पाता। ज्ञान की अनिवार्यता हर युग में रही है। हर युग में शिक्षा को मूल्य प्राप्त हुआ है। उसकी परिभाषा प्रत्येक युग में बदलती रही है।

कुछ व्यक्ति मानते हैं कि वस्तु-बोध ही ज्ञान है। इस परिभाषा के विरोध में एक नया स्वर उभरा। उसके अनुसार, मात्र वस्तु-बोध अज्ञान से अधिक कुछ नहीं है। ज्ञान वह है जहाँ हेय और उपादेय की दृष्टि स्पष्ट हो जाती है। जो कुछ जाना जाता है, उसकी क्रियान्विति हो जाती है। आचारांग सूत्र में दो प्रकार की परिज्ञाओं का उल्लेख है - ज्ञ-परिज्ञा और प्रत्याख्यान-परिज्ञा। ज्ञ-परिज्ञा की सीमा वस्तु-बोध तक है। प्रत्याख्यान-परिज्ञा में हेय का त्याग और उपादेय का ग्रहण होता है। ज्ञान की सार्थकता यही है।

भगवान महावीर तथा गीता का चिन्तन ज्ञान और आचरण की समन्विति में फलित होता है। उनके अनुसार वही पंडित हो सकता है जिसमें ज्ञान और आचार का सामंजस्य है। कोई भी मनीषी जो गहरे में उतरा हुआ है, कोरे ज्ञान का समर्थन नहीं कर सकता। बर्ट्रेंड रसेल ने अपने जीवन में कुछ ध्रुव सत्य देखे। उनके अनुसार ज्ञान के साथ विवेक का योग आवश्यक है। मैं उनके चिन्तन को यहाँ उद्धृत कर रहा हूँ -

''अपने लम्बे जीवन में मैंने कुछ ध्रुव सत्य देखे हैं - पहला यह कि घृणा, द्वेष और द्रोह को पल-पल मरना पड़ता है।

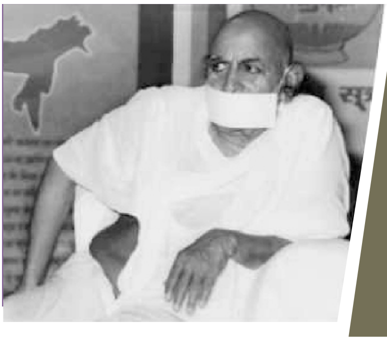

''ज्ञान के साथ-साथ विवेक को भी पुष्ट करते चलिए, भविष्य की हर सीढ़ी निरामय होगी।''

दूसरा यह कि सहिष्णुता से बड़ी कोई प्रेम-प्रीति नहीं होती। तीसरा यह है कि ज्ञान को ही पोषण देने से मनुष्य को आज की काल-रात्रि भोगनी पड़ रही है। ज्ञान के साथ-साथ विवेक को भी पुष्ट करते चलिए, भविष्य की हर सीढ़ी निरामय होगी।''

मैं स्वयं ज्ञान और विवेक (आचार) के सामंजस्य में विश्वास करता हूँ। विद्यार्थियों की आचार संहिता इसी चिन्तन की निष्पत्ति है। विद्या जीवन के साथ सत्य का संधान करती है। दोषपूर्ण शिक्षा पद्धति, शिक्षा नीति या किसी अन्य कारण से जिस युग में ऐसा नहीं होता है, वहाँ विद्या का सत्य से सम्बन्ध टूट जाता है। विद्यार्थी प्रवंचनाओं का शिकार होता है, उसका लक्ष्य विस्मृत हो जाता है और विद्या की कसौटी (परीक्षाकाल) में वह प्रवंचनाओं के आगे घुटने टेक देता है। उस समय विद्यार्थी के सामने एक प्रलोभन रहता है उत्तीर्ण होने का। उत्तीर्ण होने के लिए वह पुरुषार्थ कर अपनी प्रतिभा का स्फुरण करे, यह एक प्रक्रिया है।

अपनी असफलता को छिपाने के लिए किसी प्रवंचना का सहारा लेना शिक्षा के मूल उद्देश्य पर कुठाराघात करना है। परीक्षा में सफल होना - यह भी विद्यार्थी का एक लक्ष्य होता है। सफलता-प्राप्ति के लिए उचित पद्धतियों का ज्ञान और प्रयोग किया जा सकता है, पर साधन-शुद्धि की बात गौण हो जाती है और जैसे-तैसे आगे बढ़ने के लिए खतरों से भरी पगडंडी पकड़ ली जाती है। किसी भी गलत वृत्ति के पनपने का मूलभूत कारण है - नैतिक निष्ठा की कमी। जिस

जिस समय देश के लगभग सभी वर्ग नैतिक मूल्यों की अवहेलना कर अनैतिक मानस का निर्माण कर चुके होते हैं, वहाँ विद्यार्थी उस स्थिति से अप्रभावित कैसे रह सकते हैं?

समय देश के लगभग सभी वर्ग नैतिक मूल्यों की अवहेलना कर अनैतिक मानस का निर्माण कर चुके होते हैं, वहाँ विद्यार्थी उस स्थिति से अप्रभावित कैसे रह सकते हैं? विद्यार्थियों के मानस में जब अनैतिक मूल्य रसित हो जाते हैं, तो विद्या के साथ प्रवंचना करने में उन्हें संकोच या ग्लानि का अनुभव नहीं होता। विद्यार्थी जब तक यह सोचेंगे कि हमारी गलती छोटी है, हमारी अनैतिकता थोड़ी-सी है, तब तक वे प्रवंचना से मुक्त नहीं हो सकेंगे।

एक फकीर अपनी कुटिया के पास पड़े घास के एक ढेर में एक छोटी-सी चिनगारी रखकर कहीं चला गया। लौटकर देखता है, वहाँ आग की लपटें उठ रही हैं। सारा घास जल गया है। उसकी कुटिया भी आग की चपेट में आ गयी है। लोग वहाँ इकट्ठे हो गये हैं और पूछताछ कर रहे हैं कि आग लगी कैसे? फकीर ने कहा- "एक चिनगारी मैंने घास के नीचे रखी थी, पर वह तो छोटी-सी थी। इतनी आग कहाँ से आ गयी, मैं नहीं जानता।" लोगों ने समझ लिया कि यह इसी की मूर्खता का दुष्परिणाम है।

यह अनैतिकता की चिनगारी भी कितनी ही छोटी क्यों न हो, आगे चलकर भयंकर रूप ले लेती है। विद्यार्थियों को इस वास्तविकता से अवगत कराया जाये कि जीवन में होने वाली छोटी-सी भूल का प्रभाव समूचे जीवन पर पड़ता है। एक विकृति अन्य विकृतियों को जन्म देती है। संसार में जितना निर्माण होता है, वह सब बुद्धि के द्वारा होता है। एक झोपड़ी, भवन, मशीन, कल-कारखाने आदि जो कुछ निर्मित हुआ है, उसमें बुद्धि का योग रहा है। इस दृष्टि से ज्ञान निर्माणकारी है। ज्ञान ध्वंस की प्रेरणा भी देता है,

तोड़-फोड़ को वह एकदम से नकारता नहीं। क्योंकि ध्वंस के बिना सृजन चमक नहीं सकता। किन्तु उपयोगिता का ध्वंस विद्या का परिणाम नहीं हो सकता। ज्ञान की प्रेरणा उन वस्तुओं, विचारों, धारणाओं और संस्कारों को तोड़ने की है जिनका कोई उपयोग नहीं है, और जिन्हें तोड़कर उपयोगी सृजन किया जा सकता है। उपयोगी तत्त्वों की तोड़-फोड़ सूचनात्मक ज्ञान की निष्पत्ति हो सकती है। जिन विद्यार्थियों का ज्ञान मात्र सूचनात्मक है, उससे उनका आन्तरिक विकास नहीं होता। प्रज्ञा का जागरण नहीं होता। विद्या का मुख्य लक्ष्य है प्रज्ञा-जागरण। दशवैकालिक सूत्र में शिक्षा के उद्देश्यों की चर्चा में लिखा है -

''विद्यार्थी ज्ञानोपलब्धि के लिए, एकाग्र बनने के लिए, आत्मस्थ बनने के लिए और दूसरों को आत्मस्थ बनाने के लिए अध्ययन करता है। इस संदर्भ को स्मृति में रखा जाये तो व्यग्रता, चपलता, हिंसा और तोड़-फोड़ की बात स्वयं समाप्त हो जाती है तथा इसके साथ यह भी स्पष्ट हो जाता है कि विद्या का अनुबंध ध्वंस के साथ नहीं, निर्माण के साथ है।''

आचार्य तुलसी के 30वें महाप्रयाण दिवस के अवसर पर अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के उद्गार सुनने के लिए वीडियो के चिह्न पर क्लिक करें..

■ आलेख ■

जड़ों से जुड़ने की सरोकारी सोच

■ **डॉ. मोनिका शर्मा**, मुंबई

कुछ समय पहले तमिलनाडु के शिवगंगा जिले के कराईकुडी में अपनी जड़ों से जुड़े रहने के मानस से मिलवाती एक घटना चर्चा में आयी। वहाँ एक ही परिवार की पीढ़ियों ने गाँव-घर लौटने का मन बनाया। दुनिया के अलग-अलग हिस्से में जा बसे अपनों ने व्यस्तता और जीवन की आपाधापी को भूल एक-दूजे से मिलने का मार्ग निकाला। बढ़ती दूरियों के इस दौर में यह वाकया हर व्यक्ति को जरा संयत होकर पारिवारिक सम्बन्धों के विषय में सोचने को विवश करता है।

ध्यातव्य है कि कराईकुडी में एक एकड़ में फैले तीस कमरों वाले पैतृक घर की सौवीं वर्षगांठ के अवसर पर देश-विदेश में बसे परिवार के तीन सौ से अधिक स्वजन-परिजन इकट्ठा हुए। सौ साल पुराने अपने पैतृक आँगन की वर्षगांठ का उत्सव मनाने के लिए दुबई, मलेशिया और कनाडा में बसे सगे-संबंधियों के कुल पैंसठ परिवारों ने भाग लिया। जुड़ने-सहेजने का यह एक सकारात्मक पहलू ही है कि अपनों की ओर लौटा लाने वाली इस कड़ी को मजबूती देने के लिए घर के सदस्यों ने अपने साझे आँगन के जीर्णोद्धार का निर्णय लिया। बिखरते रिश्तों के इस दौर में यह आयोजन पीढ़ियों को जोड़ती एक रेखांकित करने योग्य घटना है।

वस्तुत: आज के भारत के हर भू-भाग पर बसे परिवारों के अधिकतर सदस्य या तो देश के ही किसी दूसरे हिस्से में पलायन कर गये हैं या विदेशी धरती पर जा बसे हैं। मुख्य रूप से रोजगार और शिक्षा जैसे कारणों से एक बार गाँव-घर छूटता है तो फिर लौटना ही नहीं हो पाता। कामकाजी

आपाधापी एवं बदलती जीवनशैली पर्व-त्योहारों और सामाजिक-पारिवारिक आयोजनों में भी नियमित मेलजोल का अवसर नहीं देती।

असल में देश-विदेश में जा बसे परिवार की पीढ़ियों में भौगोलिक दूरी के साथ ही मन के फासले भी आ जाते हैं। कभी बदलती सोच और सरोकारी भाव-बर्ताव के कारण नियमित रूप से संवाद करने में बाधा बन जाते हैं। समय के साथ प्राथमिकताएं भी बदल जाती हैं। कभी बहुत मन से बनाये गये घर बाट जोहते रह जाते हैं। ध्यातव्य है कि भारतीय प्रवासी दुनिया का सबसे बड़ा प्रवासी समुदाय है। मई 2024 के आँकड़ों के अनुसार लगभग 3.54 करोड़ भारतीय प्रवासी समुदाय में शामिल हैं। कमोबेश हर प्रांत के गाँव-कस्बे से लेकर शहरों तक के बाशिंदे दूसरे देशों में अपना ठिकाना बना चुके हैं।

हम संयुक्त परिवार से एकल परिवार तक आ पहुँचे हैं। घर-परिवार के इस नये से परिवेश में अब एकल परिजनों-स्वजनों के बीच अलगाव ही नहीं, आपराधिक आंकड़े भी बढ़ रहे हैं। सहिष्णु व्यवहार करीबी सम्बन्धों से भी नदारद हो रहा है। विरासत को सहेजने वाली भावी पीढ़ियों में विरासत को लेकर ही टकराव की स्थितियाँ बनी हुई हैं। हमारे यहाँ पारिवारिक मुकदमों की संख्या न केवल बहुत अधिक है बल्कि लगातार बढ़ ही रही है। आपसी विवादों के लाखों मामले अदालतों में लंबित हैं।

दरअसल, पारिवारिक व्यवस्था का छिन्न-भिन्न होना तो पीड़ादायी है ही, एक-दूसरे से पूरी तरह कट जाना और भी दु:खद है। बीते कुछ वर्षों में पश्चिमी देशों जैसी पारिवारिक व्यवस्था ने भारतीय समाज में भी जड़ें जमा ली हैं। समझना आवश्यक है कि पश्चिमी देशों के परिवारों में व्यक्तिगत स्वतन्त्रता और आत्मनिर्भरता के भाव को अधिक महत्व दिया जाता है। सम्बन्धों के निर्वहन को लेकर वहाँ बहुत सीमित, स्पष्ट और व्यावहारिक-सी सोच रही है। वहीं भारतीय घरों में परिवार की पीढ़ियों से भी

गहरा लगाव हुआ करता था। घरेलू सम्बन्धों से जुड़ी सम्वेदनाओं का स्थान व्यक्तिगत सरोकारों ने ले लिया है।

भारतीय संस्कृति में परिवार को आर्थिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक परेशानियों के दौर में सम्बल के तौर पर देखा जाता है। घर-परिवार से मिलने वाला सुख-समर्पण का भाव ही हमें समाज और देश से जोड़ता है। राष्ट्र के प्रति दायित्व बोध का भाव जगाता है। साथ ही पारिवारिक खुशहाली राष्ट्र निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यही वजह है कि बदलती परिस्थितियों में भी तयशुदा प्रयासों के साथ लोगों को परिवार से जुड़ाव रखने के मार्ग तलाशने होंगे। समझना होगा कि पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलता यह भावनात्मक बंधन ही मानवीय मूल्यों को थामने वाली बुनियाद है। सब कुछ बनाने-जुटाने की आपाधापी में परिवारजनों के बीच साझे सुख-दु:ख का भाव रीत रहा है। ऐसे में रिश्तों का यह ताना-बाना सहेजने की हर कोशिश अनमोल है। जुड़ाव का मानस बना लिया जाये तो जुड़े रहना कठिन नहीं।

अणुव्रत विश्व भारती

की एक अभिनव पहल

अणुव्रत पत्रिका

ई-संस्करण

नि:शुल्क पत्रिका प्राप्त करने के लिए दिये गये व्हाट्सएप के चिह्न का स्पर्श कर अपना संदेश हमें भेज सकते हैं।

ई-पत्रिका नियमित भेजने के लिए आपका मोबाइल नंबर हमारी सूची में स्वचलित रूप से पंजीकृत हो जाएगा।

अणुव्रत की बात

मनोज त्रिवेदी

हमसे जुड़ने के लिए
नीचे दिये गये चिह्न पर क्लिक करें

गोद उठाई की रस्म

डॉ. मंजु गुप्ता, नवी मुंबई

''माँ ! जल्दी से नवजात के लिए ओढ़ना, बिछौना, कपड़े दो।'' डॉक्टर बेटी विभा ने अपनी माँ से कहा।

''अचानक ऐसा क्यों कह रही हो?''

''अभी बस में प्रसव वेदना से पीड़िता ने बच्ची को जन्म दिया है। विविध जाति, धर्म के लोगों से भरी बस में किसी ने भी उसकी सहायता नहीं की। संयोग से मेरे संग मेरी डॉक्टर सहेली शिल्पा भी उसी बस में थी। अभी उसे नगरपालिका के अस्पताल में भर्ती करा के आयी हूँ। हमारी सहायता से डॉक्टरों ने उस गरीब स्त्री को भर्ती करने में कोई आनाकानी नहीं की। उसके पति ने उसे छोड़ा हुआ है। उसे आर्थिक मदद भी चाहिए।''

''ठीक है, यह लो उस स्त्री के पहनने के लिए मैक्सी, धोती, नवजात के लिए कम्बल, चादर, कपड़े और एक हजार रुपये भी। ...आगे भी उसे जरूरत होगी तो हम उसकी मदद करेंगे।''

सब सामान फटाफट थैले में भर चेहरे पर मानवता की मुस्कान लिये डॉ. विभा फुर्ती से अस्पताल पहुँची और दूसरे की अजनबी नवजात बेटी को अपनत्व की गोद में ले गोद उठाई की रस्म करके खुशी से झूमने लगी। नवजात बच्ची की अंगुली थामकर उसकी माँ के हाथ में 500-500 रुपये के दो नोट थमाकर फिर मिलने और आर्थिक मदद देने का वादा करके दोनों सहेलियाँ फर्ज का आशियाना बनकर अपने घर चल दीं। नवप्रसूता अपनी आँखों में गरीब-अमीर, ऊँच-नीच की लकीर मिटी देखकर उन दोनों की इंसानियत की ऊँचाई की चमक देख रही थी जो समरसता की गंगा बहा रही थी।

भड़ास

विवेक मेहता, नीमच

बहुत दिनों से कोई कहानी नहीं लिखी। इच्छा ही नहीं होती। जैसे-जैसे जीवन में अनुभव बढ़ने लगे, चारों ओर मात्र विसंगति, स्वार्थ, लोलुपता, दंभ के अतिरिक्त कुछ दिखायी नहीं पड़ता। अब मन ही नहीं होता कहानी-वहानी लिखने का। कल आकाशवाणी का पत्र आया था। कहानी मँगायी कोई नयी। रिकॉर्डिंग भी शीघ्र ही थी। रचनात्मकता के संकट के दौर में लिख नहीं पाऊँगा। सोचा, मना कर देता हूँ। यही सोच-विचार कर रहा था कि श्रीमतीजी का स्वर सुनायी दिया- ''सुनिए जी, पप्पू रो रहा है।''

''क्यों?'' मैं पूछता हूँ।

''उसे साइकिल चाहिए।'' कहकर पत्नी चालू हो जाती है लंबा भाषण देने के लिए। कई बार सुन चुका हूँ। वह भी मेरी आर्थिक विपन्नता को जानती है, समझती है। फिर भी ऐसा कोई मौका हाथ लगे तो भड़ास निकालने से चूकती नहीं। मेरा ध्यान आकाशवाणी के पत्र की ओर जाता है। यदि कहानी लिख दूं तो उसके पारिश्रमिक से बच्चे की साइकिल आ सकती है। ठीक है। अस्वीकृति का पत्र नहीं लिखता हूँ। कहानी के लिए कोई आइडिया सोचता हूँ। इसी बीच पत्नी का स्वर सुनायी दिया- ''सुनिए जी, आज तो छुट्टी है। जाइए, सब्जी ले आइए।''

सोचा, चलो एक पंथ दो काज। सब्जी भी ले आएंगे और कहानी के लिए आइडिया भी सोच लेंगे। थैला लेकर

निकल गया। विचारों के घोड़े दौड़ने लगे। सोचा, इस बार कहानी अमेरिका रिटर्न संस्था के नये सचिव मिस्टर कृष्ण पर ही लिख दूं। वे जब नये-नये आने वाले थे तो क्या हव्वा खड़ा हो गया था। वे यह कर देंगे, वो कर देंगे। सारा भ्रष्टाचार खत्म। धीरे-धीरे सारा माहौल ही खत्म हो गया।

वह नये-नये आये थे। खुद हजारों डॉलर की नौकरी छोड़कर सेवा करने के लिए आये थे, ऐसा जताते थे। नये थे। नागरिकों से संबंध बनाने के लिए घूम रहे थे। इसी सिलसिले में हमारी कॉलोनी में भी आये थे। हम लोगों ने छत टपकने की समस्या बतायी। वे जाँच करने छत पर आये, मगर छत देखना छोड़कर आसपास का नजारा देखते रहे। पास के गड्ढे में पानी में तैरती भैंसों को देखकर स्वास्थ्य संबंधी लंबा भाषण झाड़ दिया। गली में घूम रहे कुत्तों को जहर देकर मरवाने का सुझाव दे डाला।

एक ओर तो सेवा का ढोंग। दूसरी ओर जीव हत्या! तभी उनसे और उनके 'सेवा' शब्द से घृणा-सी हो गयी। फिर विचार आया इस विषय पर क्या लिखें कहानी। कोई दूसरा विचार ही सोचना पड़ेगा।

पिछली बार गाँव गया था। बुआ की तेरहवीं पर। क्या शानदार भोज दिया था! खाने वाले आशीर्वाद दे रहे थे बुआ के बड़े बेटे को। आखिर उसने बुआ की आत्मा को शांति पहुँचा दी। मगर मैं मन से उसमें शामिल नहीं हो पाया। मेरी आँखों में जब-तब बुआ का दयनीय चेहरा तैर आता, जो उनके मरने से पहले, जब वे अस्वस्थ थीं, तब मैंने देखा था। उस समय रोते-रोते जो कुछ उन्होंने बताया था, मैं कैसे भूल सकता हूँ। उनके बड़े लड़के ने उनके अंतिम दिनों में पैसे के लिए, जेवर और जायदाद के लिए उन्हें डराया-धमकाया। और तो और, उन पर हाथ भी उठाया। अपने छोटे भाई का हक मार लिया। वह घर की इज्जत के कारण चुप रहीं। मगर लगता है, इस अन्याय को सहन नहीं कर पायीं। न ही अपने आप को माफ कर पायीं। घुट-घुट कर मर गयीं।

मिस्टर कृष्ण लाखों डॉलर के मालिक हैं। पैसों को दाँतों में पकड़ कर रखते हैं। बुआ का बड़ा बेटा पैसों के लिए अमानवीय हरकतों पर उतर आया। यदि इसी अमानवीयता, दंभ को रेखांकित करती हुई कहानी लिखूं तो! वाहनों के बजते हॉर्न ने विचारों को भंग किया। पीछे से आवाज सुनायी दी – ''अपूर्व जी, अपूर्व जी!''

मैंने पलट कर देखा तो पांडे था। उभरता हुआ कलाकार। कल उसका गजल गायन का कार्यक्रम था। मैं गया भी था। व्यक्तिगत कारणों से जल्दी ही लौट आया था। सोचा, चलो इसे बधाई ही दे दें।

''बधाई हो। कार्यक्रम अच्छा रहा।'' मैंने कहा।

''क्या खाक अच्छा रहा साहब? मन भर गया मेरा तो। मुझ पर थूकना आप, यदि यहाँ पर दोबारा कोई कार्यक्रम किया तो।''

मैं दंग रह गया– ''क्यों? ऐसा क्या हो गया?''

''आप तो जल्दी ही चले गये थे। अच्छा किया आपने। उस...ने सारा मजा किरकिरा कर दिया।''

तभी दो-तीन परिचित और आ गये।

''मैंने तो उसे वीआईपी ट्रीटमेंट दिया था। नालायक ने तो अपनी औकात ही बता दी !'' पांडे ने कहा।

''अरे था क्या वह! फुटपाथ पर बैठकर कैरम खेलता था। चार पैसे क्या कमा लिये, सोचता है पैसों से सबको खरीद

लेगा।'' एक परिचित बोला। ''गलती तो हम लोगों की ही है। हम ऐसे लोगों को बड़ा मानते हैं। पांडे को आवश्यकता क्या थी उसे बुलाने की? आगे बिठाने की? ऐसे घटिया लोगों को पहले तो हम सिर पर बिठाते हैं और जब वे अपनी औकात पर उतर आते हैं तो उन्हें कोसते हैं।'' एक ने कहा।

तभी दूसरा बोल पड़ा, ''तुम्हारे उस वीआईपी ने वहाँ दो दारूड़िये देखे कि अपनी औकात पर आ गया।''

मैंने फिर प्रश्न किया- ''क्या बात हो गयी पांडे, बता तो सही?''

तब एक परिचित ने बतलाया। कल गजल के कार्यक्रम में शहर की ख्यात हस्ती इंदरराज ने सभा भवन में शराब के नशे में अपने कुछ साथियों के साथ हंगामा कर दिया। वे शराब के नशे में वंस मोर, वंस मोर चीखते रहे। सभी संभ्रांत व्यक्ति हॉल छोड़कर चले गये। सभा की समाप्ति की घोषणा के बाद भी वे लोग मंच पर पैसों की बौछार करते रहे। दारूड़ियों ने दादागीरी कर पांडे को एक घंटे तक गजल गाने को मजबूर किया। सुनकर अच्छा नहीं लगा। आदमी के पास नाजायज तरीकों से कुछ पैसा क्या आ गया, उसने अपने आपको लोगों का भाग्य निर्माता समझ लिया।

बातों में से बातें निकल रही थीं। बखिया उघाड़ी जा रही थी। जब से जिंदगी पैसों से रेखांकित होने लगी, जिंदगी में आचार-विचार और नैतिकता का महत्व कहाँ रहा! शब्द तलवार बनने के बजाय भड़ास बन गये। मन खट्टा हो गया। कहानी लिखने का विचार दिमाग से निकल गया।

मैं घर लौट आया। खाली थैला देखकर पत्नी ने अपने आपको, अपने भाग्य को कोसना चालू किया तो याद आया कि मैं सब्जी लाना भूल गया था। साइकिल के बारे में भी याद नहीं रहा। और कहानी! सोचने लगा, क्या मैं लिख पाऊँगा कहानी?

काव्य-सुधा

कुछ नया निर्माण करने

■ डॉ. पूनम गुजरानी, सूरत ■

चल चला चल, चल रे राही वर्जनाएं तोड़कर
साँस की सरगम में अपनी भावधारा जोड़कर
कुछ नया निर्माण करने।

स्वप्न की सौगंध तुझको, करवटें बदला न कर,
प्राण प्रण को साध अपने, बीतते जाते प्रहर,
रिश्तों का रख मान किंतु, मोह माया छोड़कर,
कुछ नया निर्माण करने।

शांति पर पहरे पड़े हैं, युद्ध का है बिगुल भारी,
आँख में भड़के हैं शोले, हाथ में सबके कटारी,
भागीरथ बन ले आ गंगे, पर्वतों को फोड़कर
कुछ नया निर्माण करने।

द्वंद्व की परछाइयों को, तू अमर विश्राम दे दे,
क्षेत्र कुरु में है खड़ा तो, गीता का तू ज्ञान ले ले,
आँख अंतस की खुलेगी, युग की धारा मोड़कर,
कुछ नया निर्माण करने।

दीन है न हीन कोई, भेद सारी ग्रंथियों को,
सत्य केवल एक होता, तोड़ सारी भ्रांतियों को,
तू गले सबको लगा ले, तेज गति से दौड़कर,
कुछ नया निर्माण करने।

अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी के पावन जन्म की 111 वर्षीय परिसम्पन्नता तथा उनकी मुनि दीक्षा के 100 वर्ष पूर्ण होने के साथ ही अणुव्रत पत्रिका के प्रकाशन के 71वें वर्ष में प्रवेश पर प्रकाशित 'तुलसी अणुव्रत सिंहनाद विशेषांक' (अक्टूबर-नवम्बर 2025) के संदर्भ में हमें निरंतर संवाद और सम्मतियाँ प्राप्त हो रही हैं। 'पाठक परख' के अंतर्गत आप प्रबुद्ध पाठकों के मूल्यवान विचारों से परिचित हो सकेंगे।

मानवमात्र के लिए उपयोगी

'तुलसी अणुव्रत सिंहनाद' का मुखपृष्ठ खोलते ही मंगल संदेश, उद्देश्यपरक तुलसी अणुव्रत काव्यसुधा का आलोक, तत्पश्चात् अणुव्रत आन्दोलन की लगभग 77 वर्षीय दीर्घकालीन यात्रा के परिप्रेक्ष्य में पाठक-मन पर अमिट प्रभाव छोड़ने वाला अतीत व वर्तमान का संयोजक उत्तमोत्तम सम्पादकीय, जिसमें अणुव्रत पत्रिका के 70 वर्षों की समयावधि की पूर्णता के साथ अणुव्रत आन्दोलन के प्रवर्तक महान संत आचार्य तुलसी की मुनि दीक्षा के 100वें वर्ष और उनके पवित्र जन्मदिवस की 111 वर्षीय सुसम्पन्नता का भावपूर्ण उल्लेख आदि हृदय पर चिर स्थायी छवि अंकित कर गया। विशेषांक में प्रकाशित सम्पूर्ण सामग्री मानवमात्र के लिए उपयोगी है। जितने श्रम, निष्ठा, समर्पण और कर्त्तव्य भाव से यह विशेषांक सर्वसमक्ष आ सका, उसकी सराहना के लिए शब्दाभाव है।

– **डॉ. विष्णु शास्त्री सरल**, चम्पावत

जीवन मूल्यों की पुनर्स्थापना का सफर

'अणुव्रत' पत्रिका पिछले 70 वर्षों से प्रकाशित हो रही है। इसके हर अंक में नैतिक मूल्यों के उत्थान, श्रेष्ठ जीवनशैली से जुड़ी सामग्री प्रकाशित होती है। पत्रिका का अक्टूबर-नवंबर 2025 'तुलसी अणुव्रत सिंहनाद विशेषांक' अपने आप में सब तरह से समृद्ध है। इस विशेषांक में प्रकाशित सभी आलेख संस्कार, संयम, नैतिक मूल्यों की स्थापना, रिश्तों-नातों की जीवन में महत्ता और उन्हें संयोजित रखने के उपायों तथा भाषा की श्रेष्ठता से गुम्फित हैं। मूर्धन्य सुविख्यात लेखकों, विचारकों, साहित्यकारों के आलेख पढ़कर आत्मिक सुख की प्राप्ति के साथ ही वैचारिक धरातल भी निर्मल हो जाता है। चित्र वीथिका, तुलसी अणुव्रत काव्य-सुधा, विभूति विचार को भी बखूबी संयोजित किया गया है। संस्मरण खण्ड ने विशेषांक की गरिमा को चार चाँद लगा दिया है। विशेषांक के श्रेष्ठ प्रकाशन के लिए संपादक मण्डल एवं संस्था से जुड़े सभी को हार्दिक बधाई। – **रामस्वरूप रावतसरे**, शाहपुरा, जयपुर

गुरुदेव तुलसी से प्रत्यक्ष साक्षात्कार-सा अनुभव

श्रद्धेय गुरुदेव आचार्य श्री तुलसी के संपर्क में आये व्यक्तियों के संस्मरणों को समाहित करते हुए एक विशेषांक निकालने की कल्पना ही मुझे अनोखी लगी। इस विशेषांक के लिए सामग्री जुटाना ही अपने आप में बहुत श्रमसाध्य, समयसाध्य और दुरूह काम था। यह एक महत्वपूर्ण धरोहर को सुरक्षित रखने और वर्षों तक भावी पीढ़ियों को प्रेरणा देने वाला सार्थक उपक्रम हुआ है। रोचक संस्मरणों के साथ यह विशेषांक गुरुदेव आचार्य श्री तुलसी के व्यक्तित्व और कर्तृत्व का भी संग्रहणीय लेखा-जोखा है। श्रद्धेय गुरुदेव के देवलोक होने के लगभग 28 वर्षों बाद प्रकाशित यह विशेषांक वर्तमान पीढ़ी को श्रद्धेय गुरुदेव तुलसी के साथ प्रत्यक्ष साक्षात्कार करने जैसा अनुभव देता है। – **जतनलाल रामपुरिया**, कोलकाता

जनसंख्या समस्या है या ताकत?

परिचर्चा के इस विषय पर पाठकों से प्राप्त चिंतन बिंदु –

जनसंख्या को नियंत्रित करना ही होगा

गुणवत्तापूर्ण जीवन जीने के लिए संसाधनों की जरूरत होती है। संसाधन कहीं न कहीं प्रकृति से ही प्राप्त होते हैं। बढ़ती जनसंख्या के अनुरूप प्रकृति का अनियंत्रित एवं अविवेकपूर्ण दोहन हमारे अस्तित्व पर ही प्रश्नचिह्न लगा रहा है। इसलिए मानवीय मूल्यों एवं संवेदनाओं को तरजीह देते हुए हमें प्रकृति के संरक्षण पर ध्यान देना होगा। इसके लिए जनसंख्या को नियंत्रित करना ही होगा।

परिवार अब संख्या-बल से ही सुरक्षित नहीं रह सकता। इन दिनों बढ़ते आर्थिक दबाव के बीच एक बड़े परिवार के लिए भोजन, स्वास्थ्य, शिक्षा एवं अन्य जरूरतों को पूरा कर पाना किसी भी तरह संभव नहीं है। युवा हम सभी के जीवन की रीढ़ हैं। आवश्यकता है उन्हें उनकी क्षमता के अनुरूप क्रियाशील बनाकर एक ताकत के रूप में नियोजित करने की। – **रमेशचंद्र पंत**, अलमोड़ा

संकीर्ण स्वार्थों से ऊपर उठना होगा

भारत की अनेक समस्याओं की जड़ अंधविश्वास और अर्थहीन परंपराएँ हैं। अर्थपूर्ण शिक्षा, अनेक भाषाओं का ज्ञान और विविध संस्कृतियों से संपर्क बच्चों को अधिक जागरूक और उदार बनाता है। जो समाज अपने खोल में

बंद हो जाते हैं, वे धीरे-धीरे सिमटने लगते हैं। भारतीय राजनीति, व्यापार, शिक्षा संस्थान, धार्मिक तंत्र, न्याय तंत्र सभी को अपने संकीर्ण स्वार्थों से ऊपर उठना होगा। भारत के सामने चुनौती जनसंख्या नहीं, बल्कि जनसंख्या की योग्यता व चरित्र है। भारत की जनसंख्या उसकी कमजोरी नहीं, उसकी संभावित शक्ति है, पर यह शक्ति तभी बन सकती है, जब हम भीड़ को नागरिक और संख्या को संस्कार में बदल दें। – **नील मणि**, मेरठ

नैतिक मूल्यों से युक्त आबादी बोझ नहीं

क्षेत्रफल और जनसंख्या में जापान हमसे बहुत छोटा है, किन्तु विकसित और कौशल से परिपूर्ण है। वहीं, विश्व के तमाम देशों में भारत एक विशाल जनसंख्या वाला देश बन गया है, लेकिन ये कोई विशेष बात नहीं है। विशेष यह है कि इस जनसंख्या में विशेषकर युवा वर्ग के प्रति हम कितने सजग हैं और युवा वर्ग भी परिवार से लेकर देश-दुनिया तक के प्रति किस गुणवत्ता के साथ अपना उत्तरदायित्व निभा रहा है। आबादी गुणवत्ता पूर्ण जीवन के साथ होनी चाहिए। उनमें नैतिक मूल्य हों, अच्छे संस्कार हों और वे अपने अधिकार और कर्त्तव्यों के प्रति सदैव उत्तरदायी भी हों। तब आबादी कभी भी बोझ नहीं होगी।

– **श्याम नारायण श्रीवास्तव**, रायगढ़

संतुलित जनसंख्या नीति सर्वोत्तम मार्ग

युवाओं की अधिक जनसंख्या राष्ट्र-निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है, यदि उसे उचित शिक्षा, कौशल, रोजगार और सकारात्मक दिशा मिले। परन्तु यदि यही युवा बेरोजगार, अशिक्षित और निराश रह जाएँ, तो वही जनसंख्या बोझ और सामाजिक असंतोष का कारण बन सकती है। जनसंख्या वृद्धि पर अत्यधिक कठोर नियंत्रण भी उचित नहीं माना जा सकता, क्योंकि इससे भविष्य में श्रमिकों की कमी और वृद्ध जनसंख्या की समस्या उत्पन्न

हो सकती है। वहीं अनियंत्रित वृद्धि संसाधनों पर असहनीय दबाव डालती है। अत: संतुलित जनसंख्या नीति ही सर्वोत्तम मार्ग है। – **गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'**, लखनऊ

<u>**आगामी परिचर्चा का विषय**</u>

कैसी शिक्षा व्यवस्था चाहते हैं हम?

☐ क्या आप भारत की शिक्षा व्यवस्था से संतुष्ट हैं?

☐ यदि नहीं, तो क्या बदलाव चाहते हैं? 3 मुख्य बिन्दु बताइए।

☐ यदि संतुष्ट हैं, तो संतुष्टि के मुख्य 3 कारण बताइए।

☐ जैसी शिक्षा हम अपने नौनिहालों के लिए चाहते हैं, क्या उसके अनुरूप शिक्षक तैयार किये जा रहे हैं?

☐ आपकी दृष्टि में वर्तमान शिक्षा में बौद्धिक विकास पर कितना जोर है और भावनात्मक विकास पर कितना?

☐ क्या शिक्षा में विज्ञान और अध्यात्म का समन्वित समावेश संभव है? कोई व्यावहारिक सुझाव!

☐ दुनिया में शिक्षा के व्यापक प्रसार के बाद भी वैयक्तिक से लेकर वैश्विक समस्याओं का समाधान हमसे दूर क्यों है?

भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्मदिन – 5 सितम्बर, शिक्षक दिवस – के अवसर पर आइए, शिक्षा से जुड़े इन गंभीर मुद्दों पर करते हैं चर्चा।

अणुव्रत पत्रिका के सितम्बर 2026 अंक में प्रकाशित होने वाली परिचर्चा के लिए अपने सारगर्भित व अनुभवजन्य विचार हमें अधिकतम 200 शब्दों में 10 अगस्त 2026 तक निम्न व्हाट्सएप नंबर के माध्यम से लिख भेजिए।

9116634512

कृपया ध्यान दें – आप द्वारा प्रेषित विचार अंतर्मन के उद्गार होने चाहिए, न कि एआई उद्भूत।

जीवन में लाएं आत्मसंयम : अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण

तीन दिवसीय अणुव्रत डिजिटल डिटॉक्स कार्यशाला

राष्ट्रीय संयोजक रोशन सुराणा की रिपोर्ट

लाडनूं। डिजिटल युग की सबसे बड़ी चुनौती 'स्क्रीन एडिक्शन' से नयी पीढ़ी को मुक्त करने हेतु अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी द्वारा अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के सान्निध्य में जैन विश्व भारती परिसर में तीन दिवसीय अणुव्रत डिजिटल डिटॉक्स (ADD) कार्यशाला का आयोजन 18 से 20 मई तक किया गया।

कार्यशाला के दौरान तीनों दिन विद्यार्थियों को पावन सान्निध्य प्रदान करते हुए अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण ने डिजिटल लत के संदर्भ में विशेष प्रेरणा देते हुए बच्चों को संकल्प दिलाया कि भोजन करते समय (Meal Time), सोने से पूर्व और उठते ही (Sleeping Time) और गाड़ी चलाते समय (Driving Time) मोबाइल व टीवी आदि का उपयोग न करें। साध्वी प्रमुखा श्री विश्रुतविभा ने

स्वस्थ जीवनशैली के लिए डिजिटल डिटॉक्स को बेहद जरूरी बताया। अणुव्रत के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री मनन कुमार ने भीतर के कषायों (क्रोध, मान, माया, लोभ) के रूपांतरण पर बल दिया। उन्होंने सहभागियों को श्वास प्रेक्षा का प्रयोग भी कराया। मुनिश्री धर्मेश कुमार ने क्रोध नियंत्रण के व्यावहारिक प्रयोग सिखाये। मुनिश्री जयदीप कुमार ने प्रेरणादायी विचारों से भावनाओं को शुद्ध व सकारात्मक बनाने पर जोर दिया। साध्वीश्री दीप्तियशा, साध्वीश्री परमार्थ प्रभा एवं साध्वीश्री चरितार्थ प्रभा ने बालिकाओं को आत्मसंयम के संस्कार दिये।

तीन दिनों तक चले विभिन्न सत्रों में प्रशिक्षक चिराग पामेचा, महावीर भटेवरा, अंबिका डागा, गरिमा ऋषभ डाकलिया ने व्यावहारिक सुझाव दिये। योग शिक्षक अवधेश कुमार एवं हनुमान शर्मा ने योग, प्राणायाम एवं जीवन विज्ञान का अभ्यास करवाया।

अणुव्रत डिजिटल डिटॉक्स के राष्ट्रीय संयोजक रोशन सुराणा के संयोजन में आयोजित तीन चरणों के शिविर में 250 विद्यार्थियों और 19 शिक्षकों ने सहभागिता दर्ज की।

अणुविभा के संयुक्त प्रबंध न्यासी रतन दुगड़ ने शिविर की विस्तृत रिपोर्ट अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण के समक्ष प्रस्तुत की। इससे पूर्व अणुव्रत समिति लाडनूं के अध्यक्ष शांतिलाल बैद ने सभी आगंतुकों का स्वागत किया।

कार्यक्रम में तेरापंथ महिला मंडल लाडनूं की मंत्री लीना प्रतापसिंह दुगड़, अणुव्रत समिति ट्रस्ट पंजीयन संयोजक विनोद बच्छावत की गरिमामयी उपस्थिति रही। कार्यक्रम को सफल बनाने में अणुविभा अध्यक्ष प्रतापसिंह दुगड़ के मार्गदर्शन में उपाध्यक्ष एवं प्रकल्प प्रभारी विनोद कोठारी, उपाध्यक्ष योगक्षेम वर्ष (अणुव्रत व जीवन विज्ञान प्रशिक्षण) संयोजिका डॉ. कुसुम लुनिया, महामंत्री मनोज सिंघवी, प्रचार प्रसार मंत्री पंकज दुधोड़िया, अणुव्रत मीडिया संयोजक संतोष सेठिया आदि का अप्रतिम सहयोग रहा।

शिविरार्थियों की जिज्ञासाएं

अणुव्रत अनुशास्ता द्वारा समाधान

प्रश्न- गुरुदेव, मोबाइल का अधिक उपयोग करने से हमारी एकाग्रता खत्म हो जाती है। इसके लिए हम क्या करें?

गुरुदेव- जब भी मोबाइल का उपयोग करो, सबसे पहले अपने मन से यह प्रश्न करो कि मैं यह मोबाइल क्यों उपयोग कर रहा हूँ? यदि वास्तव में आवश्यक कार्य है, तभी उसका उपयोग करो। यह भावना हमेशा मन में रखनी चाहिए। दूसरी बात, अनावश्यक रूप से बार-बार मोबाइल नहीं देखना चाहिए। संयमित और सजग होकर मोबाइल का उपयोग करने से एकाग्रता भी बनी रहती है और मन भी शांत रहता है।

प्रश्न : गुरुदेव, मैं मोबाइल बहुत-बहुत देखता हूँ। ऐसा कोई उपाय है कि मैं मोबाइल कम देख पाऊँ?

गुरुदेव : सबसे पहले यह सोचना होगा कि क्या इतना मोबाइल देखना वास्तव में जरूरी है। जितना लाभदायक और आवश्यक हो, उतना ही देखो। यदि मोबाइल का अत्यधिक उपयोग करेंगे, तो उसका प्रभाव पढ़ाई-लिखाई, एकाग्रता और स्वभाव पर भी पड़ेगा। फिर अपने मन को समझाना होगा और स्वयं पर संयम रखना होगा। यह भी तय करना होगा कि मुझे इतने बजे से इतने बजे तक मोबाइल नहीं देखना है। बस आवश्यकतानुसार और थोड़ा-थोड़ा ही उपयोग करना है।

विद्यार्थियों में ज्ञान का अच्छा विकास हो : आचार्य श्री महाश्रमण

राष्ट्रीय संयोजक उमेन्द्र गोयल की रिपोर्ट

लाडनूं। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी द्वारा अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के सान्निध्य में त्रि-दिवसीय जीवन विज्ञान कार्यकर्ता प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन 22 से 24 मई तक जैन विश्व भारती परिसर में हुआ। 22 मई को प्रात: महाश्रमण विहार में सभी संभागियों ने आचार्य श्री महाश्रमण से मंगलपाठ सुनकर कार्यशाला का शुभारम्भ किया। अणुविभा की ओर से सभी संभागियों का स्वागत अभिषेक कोठारी, सह संयोजक, योगक्षेम वर्ष (अणुव्रत-जीवन विज्ञान प्रशिक्षण) ने किया।

कार्यशाला के द्वितीय दिवस 23 मई को अणुव्रत अनुशास्ता ने संभागियों से उनके क्षेत्रों में जीवन विज्ञान की गतिविधियों के संचालन संबंधी जानकारी प्राप्त की। उन्होंने कहा कि आदमी के पास ज्ञान की क्षमता अच्छी हो और इमोशन पर भी कन्ट्रोल रहे। नैतिकता आदि में निष्ठा हो, व्यक्तित्व का निर्माण हो। अणुव्रत आचार संहिता संयम की प्रेरणा देती है और जीवन विज्ञान तो शिक्षा जगत से जुड़ा हुआ है। विद्यार्थियों में ज्ञान का अच्छा विकास हो। सोशल मीडिया और डिजिटल उपकरणों द्वारा बच्चों के दिमाग में असंस्कार या कुसंस्कार हावी न हो जाये। अणुव्रत डिजिटल डिटॉक्स के द्वारा भी इसके संदर्भ में कार्य किया जा रहा है। उन्होंने प्रेरणा देते हुए फरमाया कि कम से कम

रात्रि 12 बजे से प्रात: 7 बजे तक तो मोबाइल, टीवी आदि डिजिटल उपकरणों से मुक्त रहना चाहिए, इनका संयम हो। इसके अलावा नशामुक्ति की ओर भी ध्यान देना चाहिए। स्कूलों से सम्पर्क निरन्तर बना रहे, फॉलोअप पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए। स्थानीय कार्यकर्ता माह में एक-दो बार सार-संभाल करें। फॉलोअप आदि जितना संभव हो सके, करते रहें। जीवन विज्ञान पर्यवेक्षक मुनिश्री मननकुमार एवं राष्ट्रीय संयोजक उमेन्द्र गोयल ने कार्यशाला संबंधी जानकारी पूज्यप्रवर को निवेदित की।

24 मई को साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभा ने कहा कि हमें संस्कारी पीढ़ी तैयार करनी है तो उसके लिए शिक्षक को भी अच्छा होना पड़ेगा यानी शिक्षक स्वयं भी मूल्यों का जीवन जीये और विद्यार्थी भी मूल्यों का जीवन जीये। कार्यशाला संभागियों को मुख्यमुनिश्री महावीर कुमार ने भी प्रेरणादायी उद्‌बोधन प्रदान किया।

प्रशिक्षण कार्य में मुनिश्री धर्मेशकुमार, जीवन विज्ञान पर्यवेक्षक मुनिश्री मननकुमार, साध्वीश्री शुभ्रयशा, साध्वीश्री मेघप्रभा, साध्वीश्री वैराग्यश्री, साध्वीश्री आरोग्यश्री, साध्वीश्री चारित्रयशा, साध्वीश्री लावण्यप्रभा, साध्वीश्री ज्योतियशा, साध्वीश्री पुण्यप्रभा, साध्वीश्री विशालयशा, जीवन विज्ञान के राष्ट्रीय संयोजक उमेन्द्र गोयल, मुख्य प्रशिक्षक राकेश खटेड़ (ऑनलाइन), रीना गोयल, राज गुनेचा तथा हनुमान मल शर्मा का महत्वपूर्ण मार्गदर्शन व सहयोग प्राप्त हुआ। कार्यशाला में नॉर्थ जोन (बीकानेर-जयपुर संभाग) एवं सेन्ट्रल जोन से 20 महिलाओं एवं 25 पुरुषों ने भाग लिया। कार्यशाला को सफल बनाने में अणुविभा के उपाध्यक्ष कैलाश बोराणा, योगक्षेम वर्ष संयोजिका डॉ. कुसुम लुनिया, सहसंयोजक विनोद बच्छावत, सहसंयोजक अभिषेक कोठारी, नॉर्थ एवं सेन्ट्रल जोन के राज्य प्रभारियों सहित कार्यशाला संयोजिका रीना गोयल, डॉ. नीलम जैन और ममोल कोचेटा का महत्वपूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ।

जीवन विज्ञान प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर

लाडनूं। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी द्वारा सप्त दिवसीय जीवन विज्ञान प्रशिक्षक (लेवल-1) प्रशिक्षण शिविर का शुभारम्भ 1 जून को हुआ। शिविर के छठे दिन अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण की सेवा एवं पाथेय का अवसर प्राप्त हुआ। इस अवसर पर जीवन विज्ञान पर्यवेक्षक मुनिश्री मननकुमार एवं राष्ट्रीय संयोजक उमेन्द्र गोयल द्वारा आचार्यश्री को शिविर के संदर्भ में जानकारी निवेदित की गयी। आचार्यश्री ने फरमाया कि जीवन विज्ञान शिक्षा जगत से जुड़ा हुआ है। जीवन विज्ञान का प्रशिक्षण प्राप्त करके इसका उपयोग स्वयं के लिए हो और दूसरों के लिए भी हो। मुख्यमुनिश्री महावीरकुमार ने कहा कि प्रशिक्षणार्थी प्रशिक्षक पहले स्वयं अपने जीवन में इन प्रयोगों को अपनाएं, आत्मसात करें और फिर दूसरों को भी इनसे लाभान्वित करें।

शिविर में 28 बहनों एवं 18 भाइयों समेत कुल 46 प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया। 7 जून को शिविर के वर्धापन समारोह में मुनिश्री धर्मेश कुमार ने सीखने की ललक रखते हुए निरन्तर आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। जीवन विज्ञान के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री मननकुमार ने प्रशिक्षणार्थियों को कठिन मेहनत, निष्ठा एवं लगन से कार्य करने की प्रेरणा दी। वर्धापन सत्र का सफल संचालन जीवन विज्ञान के राष्ट्रीय संयोजक उमेन्द्र गोयल ने किया।

किडजोन बच्चों में संस्कार निर्माण का केन्द्र बने - आचार्य श्री महाश्रमण

जैन विश्व भारती परिसर में अणुविभा किडजोन का लोकार्पण - वीडियो देखने के लिए वीडियो के चिह्न पर क्लिक करें...

लाडनूं। अणुविभा की बालोदय योजना के अन्तर्गत सुधर्मा सभा प्रवचन पाण्डाल के पास नवनिर्मित किडजोन का भव्य लोकार्पण समारोह अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के पावन सान्निध्य में हुआ। उपस्थित केन्द्रीय टीम एवं अणुव्रती कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए अणुव्रत अनुशास्ता ने फरमाया कि यह किडजोन छोटे बच्चों के लिए संस्कार निर्माण का महत्वपूर्ण उपक्रम है। खेल-खेल एवं विभिन्न चित्रों आदि के माध्यम से बालकों में संस्कारों का रोपण किया जा सकता है। यहाँ बच्चे अणुव्रत को समझने का प्रयास कर जीवन में उतार सकते हैं। आचार्यश्री ने मुख्यमुनि प्रवर एवं चारित्रात्माओं के साथ लगभग 40 मिनट तक किडजोन का अवलोकन कर एक-एक गतिविधि की जानकारी प्राप्त की।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा ने कहा कि आज सबसे बड़ा खतरा संस्कारों एवं मूल्यों के ह्रास का है। मनोविज्ञान के अनुसार छोटे बच्चों को संस्कारी बनाना आसान है। वे जैसा देखते हैं, अनुभव करते हैं, उसी प्रकार अपना जीवन बनाने का प्रयास करते हैं। किडजोन बच्चों के मन को खींचने वाला प्रकल्प है, जहाँ उन्हें अनुशासन और आजादी दोनों प्राप्त होते हैं। साध्वीवर्या साध्वीश्री संबुद्धयशा ने कहा कि किडजोन के माध्यम से भावी पीढ़ी

को संस्कारवान बनाने का यह उपक्रम निश्चित ही स्वस्थ समाज के निर्माण की दिशा में महत्वपूर्ण साबित होगा।

इससे पहले अणुविभा अध्यक्ष प्रतापसिंह दुगड़ ने स्वागत भाषण में कहा कि जैन विश्व भारती परिसर में स्थित इस किडजोन को स्थायी रूप से संचालित किये जाने पर चिन्तन किया जा रहा है। इसकी दीवारों पर हस्तनिर्मित पेंटिंग के माध्यम से नैतिकता, प्रामाणिकता व नशामुक्ति आदि संस्कारों को उकेरा गया है। ईमानदारी की दुकान एवं जीवन विज्ञान पाठ्य-पुस्तकों की प्रदर्शनी लोगों के विशेष आकर्षण का केन्द्र रही।

इस भव्य किडजोन के उद्घाटनकर्ता आरती-राकेश कठौतिया (लाडनूं) हैं। अपने वक्तव्य में आरती कठौतिया ने कहा कि बाल-विकास के ऐसे रचनात्मक कार्य से जुड़ने का अवसर हमारे लिये सौभाग्य की बात है। अणुविभा के निवर्तमान अध्यक्ष अविनाश नाहर ने किडजोन हेतु आर्थिक सहयोग उपलब्ध करवाने पर इस दम्पती के प्रति आभार एवं कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए कहा कि वे बच्चों में मूल्यों एवं संस्कार निर्माण के प्रति विशेष जागरूकता रखते हैं। इस अवसर पर दानदाता दम्पती का अणुव्रत दुपट्टे, प्रतीक चिह्न एवं साहित्य द्वारा सम्मान भी किया गया।

कार्यक्रम का सफल संचालन अणुविभा के महामंत्री मनोज सिंघवी ने किया। अपने संयोजकीय वक्तव्य में उन्होंने बताया कि किडजोन के निर्माण में अणुव्रत के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री मननकुमार सहित अनेक चारित्रात्माओं से मूल्यवान सुझाव प्राप्त हुए।

कार्यक्रम को सफल बनाने में अणुविभा सहमंत्री सुरेन्द्र नाहटा, संगठन मंत्री डॉ. साधना कोठारी, कार्यसमिति सदस्य विनोद बच्छावत, किडजोन के राष्ट्रीय संयोजक चमन दूधोड़िया, जीवन विज्ञान के सहायक निदेशक हनुमान मल शर्मा, रामेश्वर शर्मा, नवीन नाहटा, राकेश मौर्या, शंकर सिंह आदि का सहयोग प्राप्त हुआ।

ऊर्जा की बचत – भारत की ताकत

एक संकल्प – एक दिन – एक समय – राष्ट्रहित के लिए

राष्ट्रीय संयोजिका डॉ. नीलम जैन की रिपोर्ट

विश्व पर्यावरण दिवस पर पर्यावरण संरक्षण को जन-आंदोलन का स्वरूप देने हेतु अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्त्वावधान में पर्यावरण जागरुकता अभियान के अंतर्गत ''2 घंटे ए.सी. बंद'' का राष्ट्रव्यापी अभियान आयोजित किया गया। यह ऊर्जा संरक्षण, पर्यावरण संवर्धन और जिम्मेदार नागरिकता का ऐसा सामूहिक संकल्प था, जिसने देश-विदेश के हजारों नागरिकों को एक सूत्र में जोड़ दिया। 5 जून को निर्धारित समयावधि दोपहर 2 से 4 बजे लोगों ने एक साथ ए.सी. बंद रखकर ऊर्जा संरक्षण का संदेश दिया। यह पहल पर्यावरणीय उत्तरदायित्व के साथ-साथ राष्ट्रहित में नागरिक सहभागिता का उत्कृष्ट उदाहरण बनी।

देश-विदेश में सक्रिय अणुव्रत समितियों, अणुव्रत मंचों एवं सहयोगी संस्थाओं की शाखाओं ने अभियान को जन-जन तक पहुँचाने के लिए विविध रचनात्मक माध्यमों का उपयोग किया। सार्वजनिक स्थलों, बाजारों, चौराहों, मॉल, प्रशासनिक कार्यालयों, विद्यालयों, सैन्य परिसरों, क्लीनिकों, व्यापारिक प्रतिष्ठानों तथा आवासीय क्षेत्रों में जन-जागरण गतिविधियाँ संचालित की गयीं।

चारित्रात्माओं के सान्निध्य में आयोजित कार्यक्रमों में श्रावक-श्राविकाओं, महिला मंडलों, युवक-युवतियों तथा आम नागरिकों को ऊर्जा संरक्षण का संकल्प दिलाया गया। विद्यार्थियों एवं युवाओं ने ड्राइंग, पेंटिंग, स्टोन पेंटिंग, पोस्टर निर्माण तथा पर्यावरण विषयक रचनात्मक गतिविधियों के माध्यम से 2 घंटे ए.सी. बंद करने का संदेश प्रसारित किया।

अभियान को विभिन्न समाचार-पत्रों एवं डिजिटल मीडिया मंचों में व्यापक स्थान मिला, जिससे जन-जागरण का संदेश विभिन्न भाषाओं में अनेक समाचार पत्रों के माध्यम से लाखों लोगों तक पहुँचा।

इस राष्ट्रव्यापी अभियान में 21 राज्यों एवं विभिन्न क्षेत्रों की सहभागिता रही। 184 महानगरों, नगरों, शहरों, कस्बों एवं गाँवों की सहभागिता रही। लगभग 100 अणुव्रत समितियों एवं मंचों ने इस अभियान को जन-जन तक पहुँचाया।

कुल 1,069 सहभागियों ने गूगल फॉर्म के माध्यम से अपनी सहभागिता दर्ज करायी। प्राप्त आँकड़ों के अनुसार लगभग 9,991 ए.सी. दो घंटे के लिए बंद रखे गये, जिससे लगभग 29,973 किलोवाट ऊर्जा की बचत हुई।

यह उपलब्धि केवल आँकड़ों का संग्रह नहीं, बल्कि जागरूक नागरिकों के सामूहिक संकल्प, पर्यावरणीय उत्तरदायित्व और राष्ट्रहित की भावना का जीवंत उदाहरण रही। ऊर्जा संरक्षण एवं पर्यावरण संवर्धन की दिशा में एक सार्थक, व्यावहारिक और प्रेरणादायक कदम सिद्ध हुआ।

अभियान की परिकल्पना, योजना एवं सतत मार्गदर्शन के लिए अणुविभा अध्यक्ष प्रतापसिंह दुगड़ का विशेष योगदान रहा। महामंत्री मनोज सिंघवी ने केंद्रीय संस्थाओं के साथ प्रभावी समन्वय स्थापित कर अभियान को गति प्रदान की। उपाध्यक्ष एवं पर्यावरण प्रभारी विनोद कोठारी की प्रेरणा और मार्गदर्शन ने अभियान में नयी ऊर्जा का संचार किया।

अणुव्रत विधायक मंच दिल्ली के संयोजक बने संजय गोयल

नयी दिल्ली। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के पावन सान्निध्य में 4 मई को अणुव्रत विधायक मंच की प्रस्तावना बनी। अणुव्रत पर्यवेक्षक मुनिश्री मनन कुमार के आध्यात्मिक पर्यवेक्षण में दिल्ली, राजस्थान, हरियाणा, पंजाब व मध्य प्रदेश में अणुव्रत विधायक मंच के गठन की पहल हुई।

अणुविभा अध्यक्ष प्रतापसिंह दुगड़ ने दिल्ली यात्रा के दौरान 13 जून को वरिष्ठ समाजसेवी एवं शाहदरा के विधायक संजय गोयल को अणुव्रत विधायक मंच, दिल्ली का संयोजक मनोनीत किया। इस महत्वपूर्ण कार्य में अणुविभा उपाध्यक्ष व योगक्षेम वर्ष की राष्ट्रीय संयोजिका (अणुव्रत-जीवन विज्ञान प्रशिक्षण) डॉ. कुसुम लुनिया, दिल्ली विधानसभा के पूर्व स्पीकर रामनिवास गोयल एवं बाबूलाल दुगड़ व डॉ. धनपत लुनिया का विशेष सहयोग रहा। महेन्द्र गोयल, जगदीश गोयल आदि विधायकगण ने अणुव्रत विधायक मंच से जुड़ने पर प्रसन्नता जाहिर की।

अणुविभा अध्यक्ष प्रतापसिंह दुगड़ ने अणुव्रत आचार संहिता का वाचन करवाते हुए अणुव्रत के सभी प्रकल्पों के विषय में संक्षेप में बताया।

अणुविभा का रोजगार नियोजन कार्यक्रम

लाडनूं। योगक्षेम वर्ष के अंतर्गत अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी द्वारा जैन विश्व भारती संस्थान के शिक्षा विभाग एवं योग एवं जीवन विज्ञान विभाग में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं के लिए रोजगार नियोजन कार्यक्रम का आयोजन 18 मई को किया गया। इसमें चयन बोर्ड ने जीवन विज्ञान अध्यापक एवं प्रशिक्षक के 15 पदों के लिए 38 विद्यार्थियों के साक्षात्कार लिये।

मुनिश्री धर्मेश कुमार एवं मुनिश्री मनन कुमार ने विद्यार्थियों को प्रेरणाप्रद उद्बोधन प्रदान करते हुए उज्ज्वल भविष्य हेतु मंगलकामनाएं व्यक्त कीं। चयनित विद्यार्थियों को अणुविभा द्वारा तीन माह का विशेष प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा। प्रशिक्षण के उपरांत उनका पदस्थापन अणुविभा कार्यालय लाडनूं एवं राजसमंद के साथ-साथ कोठारी कॉलेज एंड इंस्टीट्यूट, इंदौर, प्रेक्षा विश्व भारती, अहमदाबाद तथा महिला महाविद्यालय, राणावास में किया जाएगा।

हिन्दी व अँग्रेजी की प्रसिद्ध द्विभाषी बाल पत्रिका

60 पृष्ठ... रंगीन चित्रों के साथ..

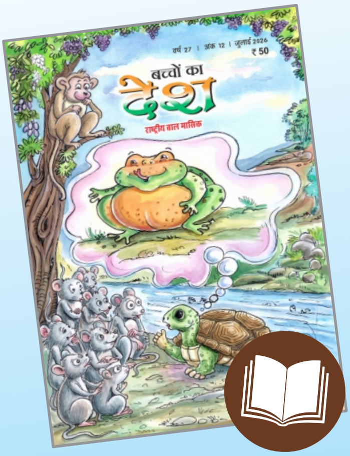

अणुविभा का

मासिक प्रकाशन

बच्चों का देश

राष्ट्रीय बाल मासिक

श्रेष्ठ बाल साहित्य रचनाकारों द्वारा सृजित कहानियाँ, कविताएँ, नाटक, पहेलियाँ व ढेरों जानकारियाँ।

नियमित पत्रिका मँगवाने के लिए देखें पृष्ठ 36

नवीनतम अंक पढ़ने के लिए पुस्तक के चिह्न पर क्लिक करें..

आचार्य श्री तुलसी

अणुव्रत आचार संहिता

1

मैं किसी भी निरपराध प्राणी का संकल्पपूर्वक वध नहीं करूँगा।
•मैं आत्म-हत्या नहीं करूँगा।
•मैं भ्रूण-हत्या नहीं करूँगा।

2

मैं आक्रमण नहीं करूँगा।
•आक्रामक नीति का समर्थन नहीं करूँगा। •विश्व-शांति तथा निःशस्त्रीकरण के लिए प्रयास करूँगा।

3

मैं हिंसात्मक एवं तोड़-फोड़ मूलक प्रवृत्तियों में भाग नहीं लूँगा।

4

मैं मानवीय एकता में विश्वास करूँगा। •जाति, रंग आदि के आधार पर किसी को ऊँच-नीच नहीं मानूँगा।
•अस्पृश्य नहीं मानूँगा।

5

मैं धार्मिक सहिष्णुता रखूँगा।
•साम्प्रदायिक उत्तेजना नहीं फैलाऊँगा।

6

मैं व्यवसाय और व्यवहार में प्रामाणिक रहूँगा।
•अपने लाभ के लिए दूसरों को हानि नहीं पहुँचाऊँगा। •छलपूर्ण व्यवहार नहीं करूँगा।

7

मैं ब्रह्मचर्य की साधना और संग्रह की सीमा का निर्धारण करूँगा।

8

मैं चुनाव के संदर्भ में अनैतिक आचरण नहीं करूँगा।

9

मैं सामाजिक रूढ़ियों को प्रश्रय नहीं दूँगा।

10

मैं व्यसन-मुक्त जीवन जीऊँगा। •मादक तथा नशीले पदार्थों - शराब, गांजा, चरस, हेरोइन, भांग, तम्बाकू आदि का सेवन नहीं करूँगा।

11

मैं पर्यावरण की समस्या के प्रति जागरूक रहूँगा।
•हरे-भरे वृक्ष नहीं काटूँगा।
•पानी-बिजली आदि का अपव्यय नहीं करूँगा।

उपरोक्त संकल्पों में से सभी या अपने भावानुसार संकल्प लेने के लिए सामने दिये गये चित्र पर क्लिक करें..

अणुविभा

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

के गौरवशाली प्रकाशन

'अणुव्रत'
पत्रिका
प्रकाशन के 70 वर्ष

विशेष छूट योजना

'बच्चों का देश'
पत्रिका
प्रकाशन के 25 वर्ष

सदस्यता अभिवृद्धि के आकर्षक अभियान से जुड़िए

अवधि	अणुव्रत	बच्चों का देश
1 वर्ष	₹ 800	₹ 500
3 वर्ष	₹ 2200	₹ 1350
5 वर्ष	₹ 3500	₹ 2100
15 वर्ष (योगक्षेमी)	₹ 21000	₹ 15000

भुगतान के लिए QR कोड को स्कैन करें

ANUVRAT VISHVA BHARATI SOCIETY
IDBI BANK Rajsamand Branch
A/c No.: 104104000046914
IFSC Code : IBKL0000104

इस मुहिम में अणुव्रत समिति और अणुव्रत मंच के साथ–साथ रुचिशील कार्यकर्त्ता व्यक्तिगत स्तर पर भी जुड़ सकते हैं।

विशेष सदस्यता अभियान की जानकारी के लिए सम्पर्क करें

- संयोजक : विनोद बच्छावत +91 88263 28328
- कार्यालय : +91 91166 34512, 94143 43100